डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली और हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'भक्ति साहित्य एवं भारतीय समाज' विषयक संगोष्ठी सम्पन्न

समाज और साहित्य से आने वाले मूल्य संशोधित होते रहेंगे : रामदेव शुक्ल

संत साहित्य व संतों द्वारा बताए रास्ते पर चलकर देश और समाज को सुंदर बनाना होगा : सुरेंद्र दुबे

भक्तिकाल अवधारणाओं के पुनराविष्कार का काल है : चित्तरंजन मिश्र

गोरखपुर। 4 मार्च 2019। "आज की दुनिया तेजी से बदल रही है। दस साल पहले की टेक्नोलॉजी दस साल बाद किसी काम की नहीं रह जाती। लेकिन शब्द की दुनिया हजारों साल बाद भी काम की रहेगी। अक्षर हमारे लिए महत्वपूर्ण है, कबीर के जमाने की चीजें काम की नहीं हैं लेकिन तुलसी, सूर, कबीर, जायसी की कविता सैकड़ों वर्षों बाद भी हमारे काम की है और आगे भी रहेगी।" उक्त विचार चितरंजन मिश्र, संयोजक, हिंदी परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के संवाद भवन में साहित्य अकादेमी नई दिल्ली और हिंदी विभाग,गोरखपुर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित भक्ति साहित्य एवं भारतीय समाज विषयक संगोष्ठी में बतौर संयोजक व्यक्त किए।

संगोष्ठी में मुख्य वक्तव्य देते हुए प्रो. रामदेव शुक्ल ने कहा कि भक्ति काल का समाज मूल्यों का समाज था। भक्ति काल में भी संकट मौजूद थे। आज का समाज आधुनिक हो गया है। समाज ने भक्त कवियों को बनाया, भक्त ने नहीं। वहां सब को समान स्थान मिला था। भक्ति काल का समाज अद्भुत समाज था। समाज और साहित्य से जो मूल्य आते हैं वह संशोधित होते रहेंगे। भारतीय समाज व भक्ति काव्य दोनों अपने ढंग से विलक्षण हैं तथा अतुलनीय है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर वीके सिंह ने कहा कि भक्ति साहित्य हमें प्रेरणा देता है। आज का भौतिकवादी युग परिवार व समाज को अलग थलग कर दिया है। हमें संत साहित्य व संतों द्वारा बताए रास्ते पर चलकर ही देश और समाज को सुंदर बनाना होगा। उद्घाटन सत्र में आभार ज्ञापन साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने किया।

संगोष्ठी के पहले दिन दो सत्रों में गंभीर विमर्श हुए। प्रथम सत्र में भक्ति साहित्य की पृष्ठभूमि विषय पर जहां चर्चा हुई वहीं दूसरे सत्र में भक्ति साहित्य – लोक और शास्त्र पर वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

भक्ति साहित्य की पृष्ठभूमि विषय पर बोलते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर केसी लाल ने कहा कि भक्ति साहित्य ऐसा साहित्य है जहां सब के लिए बातें हैं। भक्ति साहित्य का अध्ययन करते समय हमें सम्यक बोध की जरूरत है। आगे उन्होंने कहा कि भक्ति साहित्य अपने समय की चुनौतियों का सामना करने वाला साहित्य है। उस समय दबी हुई जनता को भक्तों का संबल मिला था। लोकजीवन की यह धारा है जो सत्ता के विरुद्ध काम किया। समाज में भक्तिकाल की क्रांतिकारी भूमिका थी। प्रो. जनार्दन ने कहा कि भक्त कवि अपनी बात कहने से हिचकते नहीं थे, आज हम हिचकने में घिरे हैं। संतो ने अपने समय का काम किया। पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग से आए प्रो दिनेश कुमार चौबे ने पूर्वोत्तर राज्य के साहित्य की चर्चा की। उन्होंने बताया कि उनके यहां शंकर देव की प्रतिष्ठा तुलसी, कबीर से अधिक है। प्रो. चौबे ने कहा कि भक्ति के लिए श्रद्धा की आवश्यकता होती है। भक्ति साहित्य की पृष्ठभूमि पर विचार करने की आज आवश्यकता है।

भक्ति साहित्य– लोक व शास्त्र विषय पर बोलते हुए प्रो. अनंत मिश्र ने कहा कि कविता और सत्ता एक दूसरे के विपरीत होते हैं। साहित्य हमेशा से प्रेम के पक्ष में रहा है जबकि सताएं कठोरता के पक्ष में रही हैं। आगे उन्होंने कहा कि शास्त्र को जमीन पर लाने का काम भक्ति काव्य ने किया। डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि लोक और वेद का अनुमोदन भक्ति कविता में होता है। वही साहित्य जनता के बीच पैठ बना पाता है जो न्याय के सवाल से संबद्ध हो ।आपका लिखा हुआ जनता के समझ में आना चाहिए ,चरित्र बेदाग होना चाहिए। भक्ति काल की कविता न्याय के सवाल को खड़ा करती थी। प्रो. मंजू त्रिपाठी ने तुलसीदास और उनके रामचरितमानस को समाज के लिए उपयोगी साहित्य बताया। उन्होंने रामचरितमानस के माध्यम से भक्ति काल को समझाने की कोशिश की।

संगोष्ठी के दूसरे दिन "भक्ति साहित्य : वैकल्पिक समाज का स्वप्न" विषयक सत्र में डॉ मनोज कुमार सिंह ने कहा कि भक्ति काव्य प्रेम की कविता है। भक्ति काव्य धर्म और जाति को तोड़ता है। आज के समय में दोनों ताकतें ताकतवर हो गई हैं। इसे तोड़ना अनिवार्य है। डॉ. पंकज चतुर्वेदी ने कहा कि निर्गुण अमूर्तन है, सपना है, जबकि सगुण अमूर्तन को मूर्त करने की चेष्टा है। उन्होंने कहा कि अत्याचारी शासक लोगों के ऊपर मॉडल थोपता है जबकि कविता मनुष्य को स्वतंत्र करती है। तुलसी की कविता जहां रामराज्य का मॉडल देती है वही कबीर की कविता हमें दूसरी दुनिया में पहुँचाती है। "भक्ति साहित्य : समकालीन पाठ" विषय पर बोलते हुए काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रो. अवधेश प्रधान ने कहा कि भक्ति काव्य एक ऐसी दुनिया में ले जाता है जो मानता है कि यहां सत्ताओं का महत्व नहीं है, विचारों का महत्व है। उन्होंने कहा कि भक्ति साहित्य ने संवाद का माहौल बनाया था। आगे उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के आने तक संवाद था। उन्होंने कहा कि पूँजीवाद आत्मिक विपन्नताओं का युग है। भक्तिकाल में संवाद के अनेक केंद्र मौजूद थे।

बीएचयू के प्रो. मनोज कुमार सिंह ने कहा कि भक्ति काल के कवियों ने सामंतवाद के खिलाफ जमकर आवाज उठाई थी। कबीर, हिंदू मुसलमान के पक्ष में नहीं थे, मनुष्यता के पक्ष में थे। उन्होंने दोनों संस्कृतियों को जोड़ने का काम किया था। प्रो. आशीष त्रिपाठी ने कहा कि आज विचारहीन दुनिया बनाने की कोशिशें हो रही है। ऐसे में भक्ति काल के कवियों पर विचार करना बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि भक्ति काल हमारी जीवन्त परंपरा का हिस्सा है। जब हम उलझन में होते हैं तो यह हमें रास्ता दिखाता है।

संगोष्ठी के समापन सत्र को संबोधित करते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय सिद्धार्थ नगर के कुलपति प्रो. सुरेंद्र दुबे ने कहा कि भक्ति आंदोलन देशव्यापी धार्मिक–सांस्कृतिक आंदोलन था। इसने पीड़ित जनता को संबल प्रदान किया। भक्तिकाल ने जाति के बंधन को तोड़ने का काम किया। आगे उन्होंने कहा कि आराधना का सर्वोत्तम स्वरूप भक्ति है। भक्ति काल की कविता में जीवन का यथार्थ दिखता है। सभी मनुष्यों को बराबर की दृष्टि से देखना इस कविता की खास प्रवृत्ति है।

(के. श्रीनिवासराव)